वनलक्ष्मी स्त्री वनस्य लक्ष्मीरिव तदधिष्ठानत्वात्। कद-
ल्याम् राजनि०। [राजनि०।
वनवर्वर पु० वनोद्भवः वर्वरः। कृष्णार्जके। (वनवाबुइ) वृक्षे
वनवासिन् पु० वनं वासयति सुरभीकरोति वासि-णिनि।
१मुष्ककवृक्षे २वाराहीकन्दे ३शाल्मलीकन्दे ४नील-
महिषकन्दे ५ऋषभनामौषधे च राजनि०। वने वसति
वस-णिनि। ६वनवासकर्त्तरि त्रि० स्त्रियां ङीष्।
वनवीज पु० वीजो वीजपूरकः उत्तरपदलोपः ७त०। वन-
वीजपूरे राजनि०। [राजनि०।
वनवृन्ताकी स्त्री वनस्य वृन्ताकी वार्त्ताकी। वृहत्याम्
वनव्रीहि पु० वनस्य व्रीहिः। गोधारे (उड़िधान) हेमच०।
वनशूकरी स्त्री वनस्य शूकरीव रोमशत्वात्। १कपिकच्छ्वाम्
राजनि०।७त०। २वनवराहे पु०३वनशूकरयोषिति स्त्री।
वनशृङ्गाट पु० वनस्य शृङ्गाट इव कण्टकावृतत्वात्। गोक्षुरे
अमरः। स्वार्थे क। तत्रैवार्थे। [शब्दच०।
वनशोभन न० वनं जलं शोभयति शुभ-णिच ण्वु। पद्मे
वनसङ्कट पु० सम्+कट-अच् ६त०। मसूरे शब्दच०।
वनसरोजिनी स्त्री वनस्य सरोजिनी पद्मिनीव शोभाकर
त्वात्। वनकार्पास्याम् शब्दर०।
वनस्पति पु० वनस्य पतिः नि० सुट्। पुष्पं विना जाय-
मानफले १अश्वत्थादौ वृक्षे अमरः। २वृक्षमात्रे मेदि०।
वनहास पु० वनस्य हास इव प्रकाशकत्वात्। काशतृणे
राजनि०।
वनाखु पु० वने आखुरिव। शशके त्रिका०।
वनाखुक पु० अव+नख-उकञ् अवाल्लोपः। मुद्गे त्रिका०।
वनाटु पु० वनमटति अट-उन्। १वर्वणायां नीलमक्षिका-
याञ्च शब्दच०। २अपानदेशे उज्ज्व०।
वनामल पु० वनस्यामल आमलक इव। करमर्दे शब्दमा०।
वनाम्र पु० वनस्य आम्र इव। कोशाम्रे राजनि०।
वनायु पु० वन-आयुच्। प्रशस्तघोटकोद्भवदेशभेदे (आरव)
राजनि०। [(आरवि) शब्दर०।
वनायुज पु० वनायुदेशे जायते जन-ड। प्रशस्तघोटके
वनारिष्टा स्त्री वनस्य न रिष्टं यस्याः। वनहरिद्रायाम्
राजनि०। [शुण्डीलतायाम् हारा०।
वनालिका स्त्री वनमलति भूषयति अल-ण्वुल्। हस्ति-
वनि पु० वन-इन्। १अग्नौ सि०कौ० २राशौ उज्ज्वल०।
३याचने पु० ४याचके त्रि०। [रक्तायां स्त्रियाञ्च मेदि०।
वनिता स्त्री वन-याचने कर्मणि वा०इत।।योषिति २अनु-

वनिन् पु०वनम् आश्रयतयाऽस्त्यस्य इनि। वानप्रस्थाश्रमयुक्ते
वनिष्णु त्रि० वन-इष्णुच्। याचके।
वनीपक वनीयक+पृषो० यस्य पः। याचके उज्ज्वल०।
"कृपण इव नवनीपकोपसेवितपर्वतः श्लेषात्" पमध्यता च
वनीयक स्त्री वन-इन् आत्मनो वनिं याचनमिच्छति क्यच्
ण्वुल्। याचके अमरः पृषो० यलोपः। वनीकोऽप्यत्र
सारसुन्दरी।
वनेक्षुद्रा स्त्री ७त० अलुक्स०। करञ्जे रत्नमा०।
वनेचर त्रि० वने चरति चर-ट अलुक्स०। अरण्य-
चारिणि व्याधादौ स्त्रियां ङीप्।
वनेसर्ज पु० सृजति-सृज-अच् ७त० अलुक्स०। असनवृक्षे
रत्नमा०। [कार्पास्याम् रत्नमा० २वनजाते त्रि०।
वनोद्भवा स्त्री वन एव उद्भवति उद्+भू-अच् ७त०। १वन-
वनौकस् पु० वनमेव ओकः स्थानं यस्य। १वानरे अमरः।
२वनवासिनि त्रि०।
वन्च प्रतारणे भ्वा०पर०सक०सेट् क्त्वा वेट्। वञ्चति अवञ्चीत्
वन्दन न० वदि-ल्युट्। १स्तवने २प्रणामे च। युच्।
वन्दनाप्यत्र, स्त्री। ३वदने न० शब्दच०।
वन्दनीय त्रि० वदि-अनीयर्। १नमनीये २स्तवनीये च
३पीतभृङ्गराजे पु०राजनि०।४गोरोचनायां स्त्री त्रिका०।
वन्दा स्त्री वदि-कर्मणि घञ्। (परगाछा) लताभेदे अमरः
२भिक्षुक्यां ३लताभेदे च मेदि०।
वन्दाका स्त्री वदि-आकन्। वन्दायाम् हट्टच०। गौरा०
ङीष् तत्रार्थे स्त्री शब्दर०। तत्रार्थे पु० भावप्र०
"वन्दाकः स्याद्धिमस्तिक्तः कषायो मधुरे रसे। मङ्गल्यः
कफवातास्रक्षोव्रणविषापहः"।
वन्दारु त्रि० वदि-आरु। वन्दनशीले शब्दर०।
वन्दि(न्दी) स्त्री वदि-इन् वा ङीप्। १कारावद्धमनुष्यादौ
(कएदी) शब्दर०२वन्दने ३स्तुतौ च।४सोपानके उणा०।
वन्दिग्राह पु० वन्दिमिव-गृह्णाति ग्रह-ण। बलावष्टम्भेन
घातके (डाकाइत) मिता०। "वन्दिग्राहांस्तथा वाजि-
कुञ्जराणां च हारिणः" मनुः।
वन्दिपाठ पु० ६त०। स्तुतिग्रन्थे त्रिका०।
वन्दिन् पु० वन्दते स्तौति वदि-णिनि। राजादेः १स्तुति-
पाठके अमरः। [भावप्र० २वन्दायां शब्दच०।
वन्द्य त्रि० वदि यत्। १वन्दनीये। २गोरोचनायाम् स्त्री
वन्द्र न० वन्द-रन्। कल्याणे सि०कौ०।२पूजके त्रि०उणादि०
वन्य न० वने भवः यत्। १त्वचे (दारचिनि) राजनि०।